Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

छात्रावासीय एवं गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी स्थानीयता तथा लिंग-भेद के संदर्भ में अध्ययन

Dr. Shyam Sundar Kushwaha[1]* Tanuj Kumar[2]

[1] Associate Professor and Head of Department, Department of Education, Government Women's College, Jhansi, UP

[2] Research Scholar, Bundelkhand University, Jhansi, UP

सारांश – *प्रस्तुत शोध पत्र में छात्रावासीय एवं गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी स्थानीयता तथा लिंग-भेद के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया है। न्यादर्श हेतु उच्च शिक्षा स्तर के 300 छात्रावासीय एवं 300 गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों का चयन झाँसी शहर के विभिन्न महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय परिसर से उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया। प्रदत्तों को एकत्रित करने के लिए स्वनिर्मित सामाजिक व्यवहार मापनी का प्रयोग किया गया है। सामाजिक व्यवहार का मापन पाँच आयामों यथा सामाजिक समायोजन, जीवन प्रबन्धन, सामूहिकता, नेतृत्वशीलता तथा प्रतिस्पर्धात्मकता पर किया गया है। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के फलस्वरूप पाया गया कि छात्रावासीय तथा गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर होता है। समग्र सामाजिक व्यवहार पर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों तथा छात्र तथा छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अन्तर दृष्टिगोचर नहीं हुआ।*

शब्द कुंजी – *सामाजिक व्यवहार, आवासीय वातावरण, स्थानीयता तथा लिंग-भेद*

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावना (INTRODUCTION)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य समाज में रहता है तथा दूसरों के साथ अन्तःक्रिया करता है। समाज में रहकर व्यक्ति जो भी व्यवहार करता है वह सभी सामाजिक व्यवहार के क्षेत्र में शामिल है। परन्तु आधुनिक युग में जब से विशिष्टता का दौर शुरू हुआ है, व्यक्ति के व्यवहार को भी श्रेणीकृत किया जाने लगा है। धर्म से सम्बन्धित व्यवहार को धार्मिक व्यवहार, शिक्षा से सम्बन्धित व्यवहार को शैक्षिक व्यवहार तथा संवेगों से सम्बन्धित व्यवहार को सांवेगिक व्यवहार का नाम दिया जाने लगा है। इसी प्रकार किसी समाज में रहते हुए समाज सम्मत व्यवहार को सामाजिक व्यवहार कहा गया है। व्यक्ति के सम्पूर्ण सामाजिक व्यवहार पर एक साथ शोध कर पाना असम्भव नहीं तो थोड़ा कठिन अवश्य है। सामाजिक व्यवहार से सम्बन्धित शोध की प्रक्रिया में शाहबुद्दीन (2011) ने छात्रावास की सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका पायी। ईरोमा एवं ब्रूक (2013) ने सोशल मीड़िया को सामाजिक विकास में अवरोधक पाया। रजिया एवं राशिद (2015) ने छात्रावासीय सुविधाओं का सामाजिक अन्तःक्रिया से सकारात्मक सम्बन्ध पाया। इफ्तेकार एवं अजमल (2015) ने छात्रावास में निवास करने से छात्रों में सामाजिकता, यर्थाथता तथा जबावदेही जैसे सामाजिक गुणों का विकास में सकारात्मक सम्बन्ध पाया। स्वामी (2015) ने डे-बोर्डिंग तथा सामान्य विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया। राठौर एवं मिश्रा (2015) ने विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि तथा समायोजन पर लिंग भेद तथा स्थानीयता के प्रभाव का अध्ययन किया। सिंह (2018) ने विद्यालयी वातावरण का सामाजिक समायोजन पर सार्थक प्रभाव पाया। उपाध्याय (2016) ने दिवा तथा छात्रावासीय छात्रों के सामाजिक

समायोजन में अन्तर पाया। सिंह (2016) ने दिवा तथा छात्रावासीय छात्रों की सामाजिक क्षमता में कोई अन्तर नहीं पाया। शर्मा एवं टेकचन्दानी (2018) ने छात्रावासीय वातावरण का प्रबंधन कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पाया। जोशी (2019) ने अभिभावकों के सकारात्मक व्यवहार में छात्रों के सामाजिक परिवर्तन दृष्टिकोण में सार्थक सहसम्बन्ध पाया। अबीमबेड एवं अन्य (2019) ने छात्रों के गैर-सामाजिक व्यवहार व सामाजिक आर्थिक स्तर में सहसम्बन्ध पाया। ग्यनोर (2019) ने सामाजिक व्यवहार तथा सांवेगिक मजबूती के मध्य अध्ययन किया। इब्राहिम (2019) ने घरेलू कम्प्यूटर तथा सामाजिक व्यवहार का अध्ययन किया।

उपरोक्त शोध साहित्य में आवासीय वातावरण, ग्रामीण व शहरी क्षेत्र तथा लिंग भेद पर प्राप्त परिणामों की भिन्नता के आधार पर शोधकर्ता ने प्रस्तुत विषय को शोध के रूप में चुना।

उद्देश्य (OBJECTIVES)

1. छात्रावासीय तथा गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना (HYPOTHESES)

1. छात्रावासीय तथा गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध प्रक्रिया (RESEARCH METHODOLOGY)

(i) अध्ययन विधि- शोध अध्ययन में वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

(ii) प्रतिदर्श- वर्तमान शोध अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में उच्च शिक्षा स्तर के 300 छात्रावासीय एवं 300 गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों का चयन झाँसी शहर के विभिन्न महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय परिसर से उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि द्वारा चयनित किया गया है।

(iii) अध्ययन उपकरण- आँकड़ों को एकत्रित करने के लिए स्वनिर्मित सामाजिक व्यवहार मापनी का प्रयोग किया गया है। जिसमें कुल 50 प्रश्न है। सामाजिक व्यवहार का मापन पाँच स्तर पर किया गया है। इन स्तरों को अध्ययन में सामाजिक व्यवहार की आयाम के रूप में वर्णित किया गया है। ये आयाम क्रमशः सामाजिक समायोजन, जीवन प्रबंधन, नेतृत्वशीलता, सामूहिकता, प्रतिस्पद्धात्मकता है। प्रत्येक विद्यार्थी को प्रश्नावली में पाँच अनुक्रिया विकल्प यथा पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्णतः असहमत के लिये क्रमशः 5, 4, 3, 2 तथा 1 अंक प्रदान किया गया है। नकारात्मक प्रश्नों का अंकन इसके विपरीत यथा 1, 2, 3, 4 तथा 5 अंक प्रदान करके किया गया है।

(iv) अध्ययन के चर- वर्तमान अध्ययन में सामाजिक व्यवहार आश्रित चर तथा आवासीय वातावरण, लिंगभेद तथा स्थानीयता को स्वतन्त्र चर के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

(v) प्रयुक्त सांख्यिकी- आँकड़ों के विश्लेषण के शोध अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी-मान की गणना की गयी है।

परिणाम एवं विवेचना (RESULT & DISCUSSION)

1. छात्रावासीय तथा गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार की तुलना

छात्रावासीय तथा गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार की तुलना करने के लिए परीक्षण प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन तथा दोनों समूह के मध्य अन्तर की सार्थकता के लिए टी-मान की गणना की गयी है जिसे तालिका संख्या-1 में दर्शाया गया है।

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

तालिका सं0-1

छात्रावासीय तथा गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार की तुलना

सामाजिक व्यवहार एवं सम्बन्धित आयाम	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	स्वतंत्राश	सार्थकता
सामाजिक समायोजन	छात्रावासीय	300	31.33	5.53	7.10	598	.01 स्तर पर सार्थक
	गैर छात्रावासीय	300	28.36	4.67			
जीवन प्रबन्धन	छात्रावासीय	300	45.75	8.32	1.10	598	.05 स्तर पर असार्थक
	गैर छात्रावासीय	300	46.38	5.45			
सामूहिकता	छात्रावासीय	300	32.46	5.69	12.76	598	.01 स्तर पर सार्थक
	गैर छात्रावासीय	300	27.26	4.16			
नेतृत्वशीलता	छात्रावासीय	300	40.56	8.29	4.14	598	.01 स्तर पर सार्थक
	गैर छात्रावासीय	300	38.06	6.41			
प्रतिस्पर्द्धात्मकता	छात्रावासीय	300	22.45	3.23	2.44	598	.05 स्तर पर सार्थक
	गैर छात्रावासीय	300	21.89	2.23			
समग्र सामाजिक व्यवहार	छात्रावासीय	300	172.56	16.63	8.82	598	.01 स्तर पर सार्थक
	गैर छात्रावासीय	300	161.97	12.50			

सारिणी संख्या-1 से स्पष्ट है कि सामाजिक समायोजन आयाम पर छात्रावासीय विद्यार्थियों का मध्यमान (M_1=31.33), गैर छात्रावासीय के मध्यमान (M_2=28.36) से अधिक है। जीवन प्रबन्धन आयाम पर छात्रावासीय विद्यार्थियों का मध्यमान (M_1=45.75), गैर छात्रावासीय के मध्यमान (M_2=46.38) से कम है। सामूहिकता आयाम पर छात्रावासीय विद्यार्थियों का मध्यमान (M_1=32.46) गैर छात्रावासीय के मध्यमान (M_2=27.26) से अधिक है। नेतृत्वशीलता आयाम पर छात्रावासीय विद्यार्थियों का मध्यमान (M_1=40.56), गैर छात्रावासीय के मध्यमान (M_2=38.06) से अधिक है। प्रतिस्पर्धात्मक आयाम पर छात्रावासीय विद्यार्थियों का मध्यमान (M_1=22.45), गैर छात्रावासीय के मध्यमान (M_2=21.89) से अधिक है। समग्र सामाजिक व्यवहार पर छात्रावासीय विद्यार्थियों का मध्यमान (M_1=172.56), गैर छात्रावासीय के मध्यमान (M_2=161.97) से अधिक है। छात्रावासीय तथा गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार के आयामों सामाजिक समायोजन, जीवन प्रबन्धन, सामूहिकता, नेतृत्वशीलता तथा प्रतिस्पर्धात्मकता के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए प्राप्त टी-मूल्य क्रमशः 7.10, 1.10, 12.76, 4.14 तथा 2.44 है। जबकि समग्र सामाजिक व्यवहार के लिए टी-मूल्य 8.82 है। स्वतंत्राश (Degree of Freedom) 598 के लिए .01 सार्थकता स्तर पर सामाजिक समायोजन आयाम, सामूहिकता आयाम, नेतृत्वशीलता आयाम और समग्र सामाजिक व्यवहार के लिए टी-मूल्य सार्थक है। स्वतंत्राश (Degree of Freedom) 598 के लिए .05 सार्थकता स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक आयाम पर टी-मूल्य सार्थक है। इससे स्पष्ट है कि सामाजिक समायोजन, सामूहिकता, नेतृत्वशीलता, प्रतिस्पर्धात्मकता आयाम और समग्र सामाजिक व्यवहार में छात्रावासीय विद्यार्थी, गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों से श्रेष्ठ पाये गये है। अतः शून्य परिकल्पना ‘‘छात्रावासीय तथा गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है’’ अस्वीकृत होती है। कहा जा सकता है कि छात्रावासीय तथा गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर होता है। जिसका कारण छात्रावासीय समूह का परिवेश, वृहद समूह के साथ सामाजिक अन्तःक्रिया के अवसरों की उपलब्धता तथा सामूहिक कार्यों में प्रतिनिधित्व के अवसर हो सकता है। **उपाध्याय चिंकी (2016)** ने भी छात्रावासीय तथा दिवा छात्रों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया जो कि उपरोक्त परिणाम का समर्थन करता है। छात्रावासीय तथा गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार की तुलना को आरेख संख्या-1 से भी दर्शाया गया है।

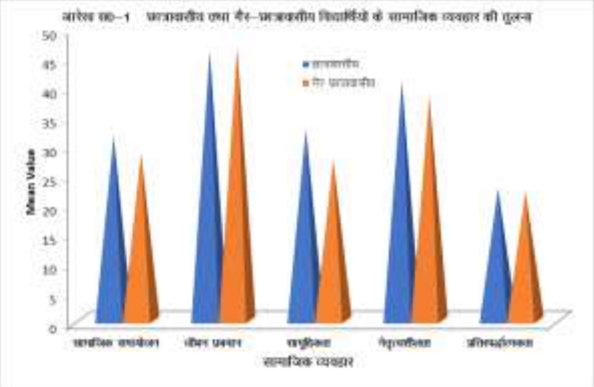

2. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार की तुलना

ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार की तुलना करने के लिए परीक्षण प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन तथा दोनों समूह के मध्य अन्तर की सार्थकता के लिए टी-मान की गणना की गयी है जिसे तालिका संख्या-2 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या-2

ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार की तुलना

सामाजिक व्यवहार एवं सम्बन्धित आयाम	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	स्वतंत्राश	सार्थकता
सामाजिक समायोजन	ग्रामीण	275	30.81	5.51	4.38	598	.01 स्तर पर सार्थक
	शहरी	325	29.02	5.02			
जीवन प्रबन्धन	ग्रामीण	275	44.99	7.84	3.48	598	.01 स्तर पर सार्थक
	शहरी	325	46.98	6.13			
सामूहिकता	ग्रामीण	275	30.83	5.87	3.96	598	.01 स्तर पर सार्थक
	शहरी	325	29.02	5.25			
नेतृत्वशीलता	ग्रामीण	275	39.20	7.68	0.31	598	.05 स्तर पर असार्थक
	शहरी	325	39.40	7.37			
प्रतिस्पर्द्धात्मकता	ग्रामीण	275	21.88	2.77	2.34	598	.05 स्तर पर सार्थक
	शहरी	325	22.41	2.78			
समग्र सामाजिक व्यवहार	ग्रामीण	275	167.73	14.99	0.69	598	.05 स्तर पर असार्थक
	शहरी	325	166.84	16.14			

सारिणी संख्या-2 से स्पष्ट है कि सामाजिक समायोजन आयाम पर ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान (M_1=30.81), शहरी विद्यार्थियों के मध्यमान (M_2=29.02) से अधिक है। जीवन प्रबंधन आयाम पर शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान (M_1=46.98), ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमान (M_2=44.99) से अधिक है। सामूहिकता आयाम पर ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान (M_1=30.83), शहरी विद्यार्थियों के मध्यमान (M_2=29.02) से अधिक है। नेतृत्वशीलता आयाम पर शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान (M_1=39.40), ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमान (M_2=39.20) से अधिक है। प्रतिस्पर्धात्मक आयाम पर शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान (M_1=22.41), ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमान (M_2=21.88) से अधिक है। समग्र सामाजिक व्यवहार पर ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान (M_1=167.73) शहरी विद्यार्थियों के मध्यमान (M_2=164.84) से अधिक है। ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक व्यवहार के आयामों सामाजिक समायोजन, जीवन प्रबन्धन, सामूहिकता, नेतृत्वशीलता तथा प्रतिस्पर्धात्मकता के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए प्राप्त टी-मूल्य क्रमशः 4.38, 3.48, 3.96, 0.31 तथा 2.34 है। जबकि समग्र सामाजिक व्यवहार के लिए टी-मूल्य 0.69 है। स्वतंत्राश (Degree of Freedom) 598 के लिए .01 सार्थकता स्तर पर सामाजिक समायोजन आयाम, जीवन प्रबन्धन आयाम तथा सामूहिकता आयाम के लिए टी-मूल्य सार्थक है। स्वतंत्राश (Degree of Freedom) 598 के लिए .05 सार्थकता स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक आयाम पर टी-मूल्य सार्थक है। जबकि नेतृत्वशीलता आयाम तथा समग्र सामाजिक व्यवहार के लिए टी-मूल्य असार्थक है। इससे स्पष्ट है कि सामाजिक समायोजन आयाम, सामूहिकता आयाम तथा प्रतिस्पर्धात्मकता आयाम पर ग्रामीण विद्यार्थी शहरी विद्यार्थियों से श्रेष्ठ पाये गये है। जीवन प्रबन्ध आयाम पर शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों से श्रेष्ठ पाये गये है। अतः शून्य परिकल्पना "ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।" को स्वीकृत किया जाता है। कहा जा सकता है कि ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। दोनों समूहों में सामाजिक व्यवहार में अन्तर नहीं होने का कारण समान आयु, समान सामाजिक स्तर तथा सामाजिक अन्तःक्रिया के अवसरों की समान उपलब्धता हो सकता है। राठौर व मिश्रा (2015) के अध्ययन में भी ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन व सामाजिक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया। ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार की तुलना को आरेख संख्या-2 से भी दर्शाया गया है।

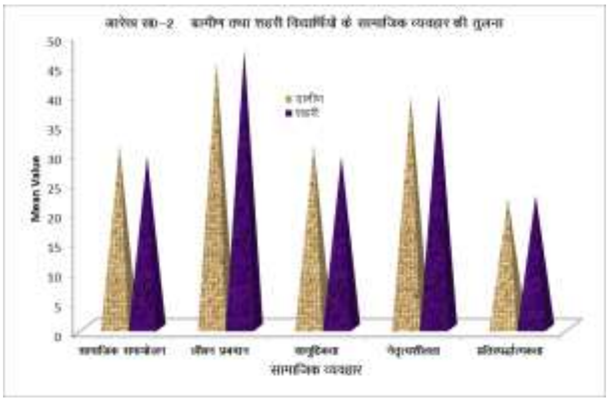

3. छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक व्यवहार की तुलना

छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक व्यवहार की तुलना करने के लिए परीक्षण प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन तथा दोनों समूह के मध्य अन्तर की सार्थकता के लिए टी-मान की गणना की गयी है जिसे तालिका संख्या-3 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या-3

छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक व्यवहार की तुलना

सामाजिक व्यवहार एवं सम्बन्धित आयाम	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	स्वतंत्राश	सार्थकता
सामाजिक समायोजन	छात्र	300	30.04	5.43	0.92	598	.05 स्तर पर असार्थक
	छात्राएं	300	29.64	5.21			
जीवन प्रबन्धन	छात्र	300	44.66	7.83	4.98	598	.01 स्तर पर सार्थक
	छात्राएं	300	47.47	5.82			
सामूहिकता	छात्र	300	29.98	6.01	0.54	598	.05 स्तर पर असार्थक
	छात्राएं	300	29.73	5.20			
नेतृत्वशीलता	छात्र	300	40.71	8.30	4.63	598	.01 स्तर पर सार्थक
	छात्राएं	300	39.91	6.33			
प्रतिस्पर्धात्मकता	छात्र	300	21.68	2.79	4.39	598	.01 स्तर पर सार्थक
	छात्राएं	300	22.66	2.70			
समग्र सामाजिक व्यवहार	छात्र	300	167.08	15.53	0.27	598	.05 स्तर पर असार्थक
	छात्राएं	300	167.43	15.73			

सारिणी संख्या-3 से स्पष्ट है कि सामाजिक समायोजन आयाम पर छात्रों का मध्यमान (M_1=30.04), छात्राओं के मध्यमान (M_2=29.64) से अधिक है। जीवन प्रबंधन आयाम पर छात्राओं का मध्यमान (M_1=47.47), छात्रों के मध्यमान (M_2=44.66) से अधिक है। सामूहिकता आयाम पर छात्रों का मध्यमान (M_1=29.98), छात्राओं के मध्यमान (M_2=29.73) से अधिक है। नेतृत्वशीलता आयाम पर छात्रों का मध्यमान (M_1=40.71), छात्राओं के मध्यमान (M_2=39.91) से अधिक है। प्रतिस्पर्धात्मक आयाम पर छात्राओं का मध्यमान (M_1=22.66), छात्रों के मध्यमान (M_2=21.68) से अधिक है। जबकि समग्र सामाजिक व्यवहार पर छात्राओं का मध्यमान (M_1=167.43), छात्रों के मध्यमान (M_2=167.08) से अधिक है। छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक व्यवहार के आयामों सामाजिक समायोजन, जीवन प्रबन्धन, सामूहिकता, नेतृत्वशीलता तथा प्रतिस्पर्धात्मकता के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए प्राप्त टी-मूल्य क्रमशः 0.92,

4.98, 0.54, 4.63 तथा 4.39 है। समग्र सामाजिक व्यवहार के लिए टी-मूल्य 0.27 है। स्वतंत्राश (Degree of Freedom) 598 के लिए .01 सार्थकता स्तर पर जीवन प्रबन्धन आयाम, नेतृत्वशीलता आयाम तथा प्रतिस्पर्धात्मकता आयाम पर टी-मूल्य सार्थक है। जबकि सामाजिक समायोजन आयाम, सामूहिकता आयाम तथा समग्र सामाजिक व्यवहार के लिए टी-मूल्य असार्थक है। इससे स्पष्ट है कि जीवन प्रबन्धन आयाम और प्रतिस्पर्धात्मकता आयाम पर छात्रायें छात्रों से श्रेष्ठ पायी गयी है। नेतृत्वशीलता आयाम पर छात्र छात्राओं से श्रेष्ठ पाये गये है। अतः शून्य परिकल्पना ‘‘छात्र व छात्राओं के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है’’ को स्वीकृत किया जाता है। कहा जा सकता है कि छात्र तथा छात्राओं के मध्य सामाजिक व्यवहार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। छात्र तथा छात्राओं के मध्य अन्तर नहीं होने के कारण अभिभावकों द्वारा बालक-बालिकाओं को विकास के समान अवसर उपलब्ध कराना हो सकता है। राठौर व मिश्रा (2015) ने भी लिंग भेद के आधार पर अपने अध्ययन में सामाजिक समायोजन व सामाजिक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया। छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक व्यवहार की तुलना को आरेख संख्या-3 से भी दर्शाया गया है।

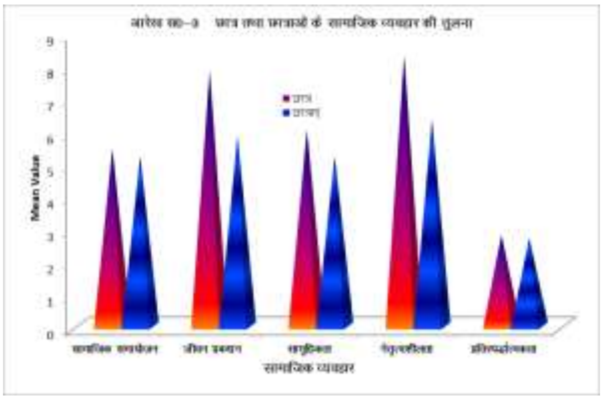

शैक्षिक निहितार्थ (EDUCATIONAL EMPLICATION)

प्रस्तुत शोध द्वारा विद्यार्थियों के छात्रावासीय वातावरण को उनके अनुरूप बनाये जाने में सफलता प्राप्त हो सकेगी। शिक्षा स्तर की संस्थाओं में विभिन्न कार्यक्रमों यथा राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय कैडेट कोर, रोवर्स रेजर्स आदि का संचालन कर विद्यार्थियों में दायित्वों का निर्धारण कर उनमें नेतृत्व गुणों का विकास किया जा सकेगा। विद्यार्थियों को भविष्य में रोजगार व शिक्षा के अवसरों से अवगत कराते हुये उनमें प्रतियोगिता की भावना को बढ़ाया जा सकेगा। विद्यार्थियों को समाज में समायोजित होने तथा अपने जीवन को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने में समर्थ बनाया जा सकेगा। विद्यार्थियों के लिए सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करने से उनमें समूह के रूप में कार्य करने व सहकारिता की समझ विकसित की जा सकेगी।

सन्दर्भ (REFERENCE)

1. **Abimbade, Oluwadara; Adedoja, Gloria; Fakayode, Bukala; Bello Lukuman (2019).** “Impact of Mobile Based Mentoring Socio-Economic Background and Religion on Girls Attitude and Belief towards Antisocial Behaviour”, British Journal of Educational Technology, Vol.-50, Issue-02, March-2019, pp-638-654, ISSN-0007-1013.

2. **इफ्तकार, अमीना (2015).** ‘ए क्वालीटेटिव स्टडी इनवेस्टिगेटिंग द इम्पैक्ट ऑफ़ हॉस्टल लाईफ’, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ़ इमरजेन्सी मेन्टेल हेल्थ एण्ड ह्यूमन रेजीलेन्स, टवसण् 17 छवण् 1, pp. 511-515.

3. **Ireoma, Akubugwo and Burke; Maria (2013).** “Influence of Social Media on Social behavior of Postgraduate Students: A Case study of Sulfored University, United Kingdom”, *IOSR Journal of Research Method in Education*, Vol. 03, Issue 06(Nov.-Dec. 2013) ISSN-2320-737X

4. **Mowat, Joan Gaynor (2019).** “Supporting the Socio-Emotional Aspects of the Primary-Secondary Transition for Pupils with Social, Emotional and Behavioural Needs Affordances and Constraints”, Emproving Schools, Vol.-22, Issue-01, March 2019 pp.-4-28, ISSN-1635-4002 .

5. **Priya, J. Johnsi (2019).** “The impact of parenting behavior on developing positive attitude towards social transformation among adolescents.” Journal on Educational Psychology, Vol-12, Issue-03, pp. 34-41.

6. **राठौर, योगिता तथा संस्मृति मिश्रा (2015).** ‘‘ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन’’ इन्टरनेशनल जर्नल आफ मल्टीडिस्प्लेनररी रिसर्च एण्ड डेवलमेंट, Vol-02, Issue-02, 2015 pp. 434-436.

7. **Raziah, Jasmine Zea and Radha Rashid Radha (2015).** “The Influence of Hostel Services capes on Social Interaction and Service Experience”, Unpublished Ph.D. Thesis, School of

Hospitality and Tourism Management, University of Surrey.

8. **सिंह, बलवान (2018).** ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन'' इन्टरनेशनल एजूकेशन एण्ड रिसर्च जर्नल, ISSN-2424-9916, Vol-04 Isse-09, Sept-2018.

9. **सिंह, नीलू (2016).** ''विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' इन्टरनेशनल जर्नल आॅफ मल्टीडिसीप्लेनटरी एजुकेशन एण्ड रिसर्च, ISSN-2255-4588, Vol-01, Isse-02, April-2016, pp. 31-34.

10. **स्वामी, शिल्पा (2015).** ''उच्च प्राथमिक स्तर पर डे-बोर्डिंग व सामान्य विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक, सांवेगिक तथा सामाजिक समायोजन का अध्ययन'' अप्रकाशित पी-एच0डी0 थीसिस, शिक्षा संस्थान, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान http://hdl.handle.net/10603/139849

11. **Shahahudin, Sharitah Hapsah Syed Hasan; Razak, Mohamad Abdul and Khoon Koh, Ailc (2011).** "Thriving in a faculty and college setting", College student Journal, Vol. 45, Issue 01, pp. 102-104. March 2011 ISSN- 0146-3934

12. **Singh, Mangal (2016).** 'A Comparative study of Hosteler and Non-Hosteler students on self concept' International Journal of Novel Research in Education and Learning, Vol.-3, Issue-2, March&2016 PP. 22-24

13. **Talaee, Ebrahim (2019).** "Longitudinal Impacts of Home Computer use in Early Years on Children's Social and Behavioral Development", International Electronic Journal of Elementary Education, Vol.-11, Issue-03, Jan. 2019, pp.-233-295ISSN-1367-9298.

Corresponding Author

Dr. Shyam Sundar Kushwaha*

Associate Professor and Head of Department, Department of Education, Government Women's College, Jhansi, UP